विश्व पर्यावरण दिवस

05 जून 2020

केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड

क्षेत्रीय निदेशालय (मध्य)

भोपाल

विश्व पर्यावरण दिवस प्रतिवेदन

(01 जून से 05 जून 2020)

संयुक्त कदम उठाने हेतु, एक मंच

विश्व पर्यावरण दिवस दुनिया भर में पर्यावरण के संरक्षण व जन जागरूकता हेतु कदम उठाने की दृष्टि से संयुक्त राष्ट्र द्वारा आयोजित किया जाने वाला सबसे महत्त्वपूर्ण दिन है। 1974 में अपनी शुरुआत से लेकर अब तक पर्यावरण दिवस लोगों तक पहुंचने का एक व्यापक मंच बन चुका है और यह 100 से अधिक देशों में व्यापक स्तर पर आयोजित किया जाता है।

लोगों का दिन

विश्व पर्यावरण दिवस मुख्य रूप से, धरती व पर्यावरण की देखभाल के लिए कुछ करने की इच्छा रखने वाले एवं प्रकृति को सहेजने वाले "लोगों का दिन" है। यह स्थानीय, राष्ट्रीय एवं वैश्विक स्तर पर केन्द्रित हो सकता है तथा इसमें अकेले व्यक्ति के द्वारा भी सहयोग व सहभागिता की जा सकती है और वैश्विक स्तर पर जुड़ाव महसूस किया जा सकता है।

विषय

प्रत्येक विश्व पर्यावरण दिवस एक विषय के अंतर्गत मनाया जाता है जो किसी खास पर्यावरण समस्या की ओर ध्यान केंद्रित करता है। 2020 का विषय है "जैव विविधता" तथा नारा है 'प्रकृति के लिए समय' ।

मेज़बान

प्रत्येक वर्ष विश्व पर्यावरण दिवस की मेज़बानी विश्व का कोई भी एक देश करता है, जहां विभिन्न समारोह आयोजित किए जाते हैं। मेज़बान देश पर ध्यान केंद्रित होने से इसकी पर्यावरणीय चुनौतियां सामने आती हैं और उनसे निपटने के प्रयासों को बल मिलता है। इस वर्ष विश्व पर्यावरण दिवस की मेज़बानी कोलम्बिया कर रहा है।

प्रत्येक विश्व पर्यावरण दिवस एक थीम के आधार आयोजित किया जाता है जो विशेष रूप से तात्कालिक पर्यावरणीय चिंता पर ध्यान केंद्रित करता है। 2020 की थीम, "प्रकृति के लिए समय" इस वैश्विक संकट का मुकाबला करने के लिए अपने कार्य को संपादित करने की चेतावनी है।

केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड, क्षेत्रीय निदेशालय, भोपाल ने भी विश्व पर्यावरण दिवस 2020 के अवसर पर समारोह व रुचिकर गतिविधियां आयोजित की। क्षेत्रीय निदेशालय, भोपाल द्वारा इसके अन्तर्गत संगोष्ठी, जैव विविधता पर वेबीनार, ओपन माइक वीडियो प्रतियोगिता, वृक्षारोपण व लघु कार्यशाला आदि का आयोजन किया गया।

पर्यावरण और सतत विकास लक्ष्य

संयुक्त राष्ट्र द्वारा सतत विकास के लिए 2030 एजेंडा हमारे संकल्प "ग्रह और उसके प्राकृतिक संसाधनों की स्थायी सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए" बताता है। सतत विकास के इस एजेंडे बिन्दु 14 और 15 में विशेष रूप से पानी, भूमि और पारिस्थितिक तंत्र की रक्षा के साथ-साथ समुद्री और स्थलीय संसाधनों का उचित उपयोग करने पर ध्यान केंद्रित करते हैं।

सन् 1972 में 05 जून से 16 जून तक मानव पर्यावरण पर शुरू हुये सम्मेलन में संयुक्त राष्ट्र आम सभा तथा संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम के द्वारा कुछ प्रभावकारी अभियानों को प्रारंभ करने तथा हर वर्ष पर्यावरण दिवस मनाने की कल्पना की थी। इसे पहली बार 1973 में 'केवल धरती' थीम के साथ मनाया गया था तथा 1974 से दुनिया के विभिन्न शहरों में विश्व पर्यावरण दिवस की मेजबानी प्रारंभ की गई। संपूर्ण विश्व में जन-सामान्य को जागरूक बनाने के साथ ही कुछ सकारात्मक पर्यावरणीय कार्यवाही को लागू करने तथा पर्यावरणीय मुद्दों को सुलझाने के लिये तथा हरित पर्यावरण

के महत्व के बारे में वैश्विक स्तर पर जन-जागरूकता लाना इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य है। पर्यावरण की सुरक्षा की जिम्मेदारी सिर्फ सरकार या निजी संगठनों की ही नहीं, बल्कि संपूर्ण समाज की है, यह संदेश भी विश्व पर्यावरण दिवस के माध्यम से देने का प्रयास किया जाएगा।

उपरोक्त बैठक में भारत की तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी द्वारा भाग लिया गया था, श्रीमती गांधी के स्वदेश वापसी के बाद से ही पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में संवैधानिक प्रावधानों को लागू करने का कार्य प्रारंभ हुआ। इसके बाद हमारे देश में पर्यावरण संरक्षण की दिशा में कदम उठाते हुए प्रारंभिक रूप में जल (प्रदूषण निवारण तथा नियंत्रण) अधिनियम, 1974 तत्पश्चात वायु (प्रदूषण निवारण तथा नियंत्रण) अधिनियम, 1981 लागू किया गया तथा कालांतर में समय व परिस्थिति के अनुसार विभिन्न प्रदूषणकारी तत्वों की जलिटताओं के आधार पर समुचित प्रबंधन हेतु सर्वमान्य व प्रभावी कानून बनाए गए। पर्यावरण संबंधी नियमों के अनुपालन की जिम्मेदारी राष्ट्रीय स्तर पर पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय एवं केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड तथा राज्य स्तर पर राज्य सरकारों एवं राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्डों को प्रदान की गई है।

केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड राष्ट्रीय स्तर पर पर्यावरण संरक्षण, प्रदूषण मापन व नियंत्रण के क्षेत्र में अनेक वैज्ञानिक और तकनीकी कार्यों का सम्पादन करता है। बोर्ड के विभिन्न कार्यों में एक कार्य जन-सामान्य को पर्यावरण के प्रति जागरूक करना तथा व्यक्तिगत स्तर से संस्थागत स्तर तक पर्यावरण संरक्षण के विभिन्न पहलुओं की जानकारी प्रदान करना भी है।

केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड, क्षेत्रीय निदेशालय, भोपाल द्वारा प्रतिवर्ष विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर अनेक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता रहा है जिसमें पर्यावरण संरक्षण के वर्तमान मुद्दे जैसे- नगरीय ठोस अपशिष्ट प्रबंधन, मल-जल प्रबंधन, ओद्यौगिक प्रदूषण नियंत्रण, वन संरक्षण, जलवायु परिवर्तन आदि पर जन-जागरूकता की जाती रही है तथा प्रत्येक वर्ष संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण संगठन द्वारा घोषित थीम व स्थानीय आवश्यकता के आधार पर पर्यावरण दिवस कार्यक्रमों की रूपरेखा तैयार की जाती है।

क्षेत्रीय निदेशालय, केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड, भोपाल द्वारा विभिन्न कार्यक्रमों की श्रंखला का आयोजन दिनांक 01.06.2020 से 05.06.2020 के मध्य किया गया चूंकि इस वर्ष कोरोना वाइरस के संक्रामण की संभावना के कारण व भारत सरकार के दिशा निर्देशों का पालन करते हुए किसी भी तरह के सार्वजनिक आयोजन नही किया गया यद्यपि सोशल डिस्टेन्सिंग का पालन करते हुए व इलेक्ट्रोनिक माध्यम की सहायता से इस कार्यक्रम का सफल आयोजन किया गया। ईसमें निम्नलिखित कार्यक्रमों की श्रंखला आयोजित की गई-

पर्यावरण संगोष्ठी :-

कार्यक्रम के प्रारम्भ में क्षेत्रीय निदेशालय में पर्यावरण संगोष्ठी का आयोजन दिनांक 01.06.2020 को किया गया जिसमें कार्यालय के सभी अधिकारियों/कर्मचारियों ने भाग लिया तथा पर्यावरण दिवस के इस वर्ष के स्लोगन एवं पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में किए जा रहे नवीनतम शोधों के ऊपर विचारों का आदान प्रदान किया गया। संगोष्ठी का मुख्य विषय जैव विविधता से संबन्धित था जिस पर परिचर्चा की गई एवं विभिन्न राजय सरकारों द्वारा इस बाबत क्या कदम उठाए जा रहे है इस बाबत समीक्षा की गई। संगोष्ठी के दौरान कार्यालय के अन्य प्रतिभागियों ने भी अपने-अपने विचार व्यक्त किए व इस बारे में अपने अनुभवों को साझा किया।

संगोष्ठी में डॉ आर.पी.मिश्रा प्रभारी ने जैव विविधता के बारे में बताया की 'जैव विविधता' शब्द मूलतः दो शब्दों से मिलकर बना है- जैविक और विविधता। सामान्य रूप से जैव विविधता का अर्थ जीव जन्तुओं एवं वनस्पतियों की विभिन्न प्रजातियों से है। प्रकृति में मानव, अन्य जीव जन्तु तथा वनस्पतियों का संसार एक दूसरे से इस प्रकार जुड़ा है कि किसी के भी बाधित हाने से सभी का सन्तुलन बिगड़ जाता है तथा अन्ततः मानव जीवन प्रभावित हाता है।

जैव विवधता विभिन प्रकार के पारिस्थितिक तंत्र सेवाए का आधार बनता है जो की मनुष्य के उत्थान में सहायक होती है। मनुष्य द्वारा लिए गए फैसले जैव विवधता को प्रभावित करते है जो की बदले में सभी को प्रभावित करते है। सर्वाधिक व्यापक रूप से परिभाषित परिभाषाओं में से एक प्रजातियों के बीच प्रजातियों, पारिस्थितिकी प्रणालियों के बीच परिवर्तनशीलता के संदर्भ में इसे परिभाषित करता है। यह किसी क्षेत्र, बायोम या ग्रह के भीतर आनुवांशिक विविधता, पारिस्थितिकी तंत्र भिन्नता, या प्रजाति भिन्नता (प्रजातियों की संख्या) का उल्लेख कर सकता है

जैव विवधता में हर प्रकार के पारिस्थितिक तंत्र सम्मलित होते है चाहे वो प्रबंधित हो या अप्रबंधित। यह प्रकृति का एक अनिवार्य घटक है और यह मानव जाति के लिए भोजन, ईंधन, आश्रय, दवाइयों और अन्य संसाधनों को प्रदान करके मानव प्रजातियों के अस्तित्व को सुनिश्चित करता है। जैव विविधता की समृद्धि क्षेत्र की जलवायु और क्षेत्र पर निर्भर करती है।

वृक्षारोपण कार्यक्रम (05.06.2020)

विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर क्षेत्रीय निदेशालय, भोपाल में दिनांक 05.06.2020 को वृक्षारोपण कार्यक्रम किया गया। वृक्षारोपण पश्चात् सभी उपस्थितों ने पर्यावरण संरक्षण संबंधी शपथ ली। वृक्षारोपण कार्यक्रम उपरांत प्रभारी डॉ.आर.पी.मिश्रा द्वारा उपस्थित अधिकारियों/कर्मचारियों को संबोधित किया तथा पर्यारण संरक्षण में हमारे प्रयास किस तरह सहायक हैं इस बाबत् जानकारी प्रदान की। इस अवसर पर उपस्थित अन्य अधिकारी एवं कर्मचारियों ने भी अपने-अपने विचार व्यक्त किये व वृक्षों के महत्व पर चर्चा की। क्षेत्रीय निदेशालय भोपाल की ओर से डॉ. वाय.के.सक्सेना वैज्ञानिक ख व श्री राजीव शर्मा द्वारा भी इस अवसर पर पर्यावरण संरक्षण पर अपने विचार व्यक्त किए।

ओपन माईक वीडियो प्रतियोगिता :-

पर्यावरण दिवस कार्यक्रमों की श्रंखला में बच्चो व युवाओं की सहभागिता बड़ाने के उद्देश्य से ओपन माइक वीडियो प्रतियोगिता का आयोजन भी किया गया तथा इसमे शहर के 30 से अधिक स्कूल व कॉलेज के विध्यार्थियों से संपर्क किया गया तथा उन्हे प्रतियोगिता के लिए आमंत्रित किया गया। इस प्रतियोगीता का विषय भी जैव विविधता विषय पर ही आधारित था। इस प्रतियोगीता का भी अच्छा प्रतिसाद मिला तथा अनेक बच्चो ने 02 से 03 मिनट के

वीडियो बनाकर प्रेषित किए। इस कार्यक्रम का समन्वयन डॉ. वाय.के.सक्सेना वैज्ञानिक ख व श्रीमती रानु चौकसे वर्मा वैज्ञानिक 'ख' द्वारा किया गया। इस प्रतियोगिता के विजेता प्रतिभागियों को कार्यालय द्वारा ई-प्रमाणपत्र भी प्रदान किया जायेगा।

<u>वेबीनार :-</u>

आज के समय मे समाज में त्वरित संदेश पहुचाने हेतु सोशल मीडिया का बहुत योगदान है इसी बात को ध्यान में रखते हुए कार्यालय द्वारा एक वेबीनार का आयोजन दिनांक 05.06.2020 को किया गया जो जैव विविधता व पर्यावरण विषय पर आधारित था तथा इसे विषय विशेषज्ञ श्री आर.श्रीनिवास मूर्ति, सदस्य सचिव जैव विविधता बोर्ड, मध्य प्रदेश द्वारा प्रस्तुत किया गया। इस वेबीनार में डॉ. आर.श्रीनिवास द्वारा बताया गया की जैव-विविधता मानव सभ्यता के विकास की स्तम्भ है इसलिये इसका संरक्षण अति आवश्यक है। जैव-विविधता हमारे भोजन, कपड़ा, औषधीय, ईंधन आदि की आवश्यकताओं की पूर्ति के साथ-साथ पर्यावरण संरक्षण में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। जैव-विविधता पारिस्थितिक संतुलन को बनाये रखने में सहायक होती है।

श्री आर.श्रीनिवास द्वारा यह भी बताया गया की जैव विविधता का हमारे जीवन में काफी महत्व है। ऐसा पर्यावरण जो जैव विविधता में समृद्ध है, टिकाऊ आर्थिक गतिविधियों के लिए, विकल्पों के सबसे वृहद अवसर प्रदान करती है। जैव विविधता के ह्रास से प्रायः परितंत्र की उत्पादकता कम हो जाती है, जिसके कारण विभिन्न वस्तुओं और सेवाओं को प्रदान करने संबंधी उनकी क्षमता भी कम हो जाती है। जिनका हम लगातार उपभोग करते हैं। इससे परितंत्र में अस्थिरता आती है और प्राकृतिक आपदाओं जैसे बाढ़, सूखा और तूफान एवं मानव जनित दबावों जैसे प्रदूषण और जलवायु परिवर्तन से लड़ने की क्षमता भी कम हो जाती है। वातावरण में तीव्र गति से होते नकारात्मक बदलाव के कारण बहुत से पेड़–पौधे और पशु–पक्षी विलुप्त हो चुके हैं जिससे जैव विविधता को बनाये रखने के स्तर में भी काफी गिरावट आई है। इसलिए यह जरूरी हो जाता है कि मानव के अस्तित्व को बचाये रखने के लिए और अपने वातावरण की शुद्धता के लिए इन नकारात्मक बदलावों को काबू किया जाये।

जैव विविधता वनस्पति, जन्तुओं और अन्य जीवों का परिस्थितिक तंत्र में सही संतुलन है ये सभी वातावरण की शुद्धता को बनाने में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। पशुओं और पौधों का प्रकृति ने असामान्य तरीके से बंटवारा किया है। कहीं ज्यादा तो कहीं कम। प्रकृति द्वारा किये इस असामान्य वितरण के पीछे मूल कारण है हमारे गृह की जलवायु का अनियमित होना। धरती के अलग अलग भागों का मौसम एक दूसरे से बिलकुल भिन्न है और इसी वजह से हर जगह का जीवन एक दूसरे से विविध है। वातावरण में भीषण बदलाव हुए जिसके कारण जैव विविधता को बनाये रखने में गिरावट आयी है। यह बिगड़ते हालात हमारे मनुष्य जीवन के लिए किसी भयंकर खतरे से कम नहीं है। भौगोलिक परिस्थितियों पर ध्यान देना जरूरी है ताकि जैव विविधता के लिए कोई संकट उत्पन्न न हो और जीव–जन्तुओं, पेड़–पौधों के जीवन पर भी किसी तरह का कोई खतरा नहीं आये।

हर एक वनस्पति तथा जीव को रहने योग्य बनाने में अलग–अलग उद्देश्य है। इसलिए हमें अपने वातावरण की शुद्धता को उच्च स्तर तक पहुँचाना है तो जैव विविधता के संतुलन को बनाये रखने पर अपना ध्यान केंद्रित करना होगा जिससे मानव जाति को जीवनयापन में किसी तरह की कठिनाई का सामना न करना पड़े। उपरोक्त वेबीनार यूट्यूब लिंक https://youtu.be/vTEJc-wtI90 पर भी पर उपलब्ध है।

इस वेबीनार का आयोजन कार्यालय मे उपलब्ध संसाधनों द्वारा ही किया गया है। इस कार्य का समन्वयन श्री सुनिल कुमार मीणा वैज्ञानिक 'घ' द्वारा किया गया।

कार्यशाला (05.06.2020) -

पर्यावरण दिवस कार्यक्रमों की श्रृंखला में एक कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसका विषय 'जल की जैव विविधता' था इसे विषय विशेषज्ञ डॉ.पी.सी. पाटिल, वरिष्ठ वैज्ञानिक सहायक द्वारा प्रस्तुत किया गया। इस कार्यशाला में डॉ.पी.सी. पाटिल द्वारा बताया गया की जलीय जैव विविधता का अर्थ है कि पानी में मौजूद कीड़े, घोंघे, मछलियां, कछुए और डॉल्फ़िन जैसी प्रजातियाँ प्रचुर संख्या में उपलब्ध हों. जलीय जैव-विविधता का आधार जल की गुणवत्ता होता है. जल स्वच्छ

होता है और उसमे ऑक्सीजन अधिक होती है तब ही वह अनेक जलीय प्रजातियों को धारण करने में सक्षम होता है।

कार्यशाला में डॉ.पी.सी. पाटिल द्वारा यह भी बताया गया की तालाब जल में पाये जाने वाले जीव-जंतुओं की उपयोगिता सिर्फ मानव के लिये न होकर एक पारिस्थितिक तंत्र के संदर्भ में होती है।

प्राथमिक उपभोक्ता के अंतर्गत समस्त शाकाहारी जन्तु आते हैं, जोकि अपने पोषण के लिये उत्पादकों पर निर्भर रहते हैं। जल की सतह के नीचे उपस्थित जीवधारी नितलस्य कहलाते हैं। ये शाकाहारी जीवों के ऐसे समूह हैं, जोकि जीवित पौधों पर आश्रित होते हैं अथवा तालाब जल की तली में उपस्थित मृत पादप अवशेषों पर जीवन निर्वहन करते हैं तथा डेट्रीवोर्स कहलाते हैं। जन्तु-प्लवक ये तैरने वाले अथवा जल में बहने वाले जन्तुओं का समूह है। इसके अंतर्गत युग्लीना, सायक्लोप्स आदि आते हैं।

द्वितीयक उपभोक्ता के अंतर्गत तालाब जल में उपस्थित मांसाहारी ऐसे जीव आते हैं, जोकि अपने पोषण के लिये प्राथमिक उपभोक्ताओं (शाकाहारी जीव) पर निर्भर रहते हैं। जलीय कीट एवं मछलियाँ अधिकांश कीट, बीटलस है जो कि जन्तु प्लवकों पर आश्रित होते हैं।

तृतीयक उपभोक्ता के अंतर्गत तालाब-जल की बड़ी मछलियाँ आती हैं, जोकि छोटी मछलियों का भक्षण करती हैं। इस प्रकार तालाब के पारिस्थितिक तंत्र में बड़ी मछलियाँ ही तृतीयक उपभोक्ता या सर्वोच्च मांसाहारी होती हैं। अपघटक इन्हें सूक्ष्म उपभोक्ता भी कहते हैं, क्योंकि इसके अंतर्गत ऐसे सूक्ष्म जीव आते हैं, जो मृत जीवों के कार्बनिक पदार्थों का अपघटन करके उससे अपना पोषण प्राप्त करते हैं। इसके अंतर्गत जीवाणु एवं कवक जैसे- राइजोपस, पायथियम, सिफैलोस्पोरियम, आदि सम्मिलित किए गये हैं। उपरोक्त कार्यक्रम यूट्यूब लिंक https://youtu.be/nizqUbDelaA पर भी पर उपलब्ध है।

आकाशवाणी पर प्रसारण

संचार के माध्यमों में आज भी रेडियो से प्रसारित कार्यक्रमों का विशेष स्थान है, अतः पर्यावरण संरक्षण संदेश व कार्यालय की गतिविधियों को अधिकाधिक लोगों तक पहुंचाने के उद्देश्य से आकाशवाणी के राष्ट्रीय समाचार कार्यक्रम के माध्यम से भी कार्यालय द्वारा आयोजित कार्यक्रम का

प्रसारण दिनांक 05.06.2020 को किया गया, जिसमें कार्यालय द्वारा जैव विवधता विषय पर आयोजित वेबीनार की चर्चा की गई । उपरोक्त कार्यक्रम में ही डॉ. आर.श्रीनिवास मूर्ति, सदस्य सचिव जैव विविधता बोर्ड, मध्य प्रदेश द्वारा विश्व पर्यावरण दिवस के इस वर्ष के विषय के वैज्ञानिक पहलू पर प्रकाश डाला। उपरोक्त कार्यक्रम यूट्यूब लिंक https://youtu.be/xts82c56H0k पर भी पर उपलब्ध है।

उपसंहार :-

क्षेत्रीय निदेशालय, भोपाल द्वारा विश्व पर्यावरण दिवस 2020 के अवसर पर दिनांक 01.06.2020 से 05.06.2020 के मध्य अनेक कार्यक्रम आयोजीत किए गए जिसमें कार्यालय के प्रत्येक व्यक्ति ने पूरे मनोयोग के साथ कार्यक्रमों में सहभागिता की तथा व्यापक जन-जागरूकता हेतु व पर्यावरण संरक्षण के इस पुनीत कार्य को अनवरत् बनाए रखने के उद्देश्य से संगोष्ठी, जैव विविधता पर वेबीनार, ओपन माइक वीडियो प्रतियोगिता, वृक्षारोपण व लघु कार्यशाला आदि कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यालय द्वारा जैव विविधता के संरक्षण के उदेश्य से तथा इस वर्ष की थीम के अनुसार 'प्रकृति के लिए समय' हेतु भारतीय परिवेश में ही भारतीय तकनीकी व व्यापक जन जागरूकता कार्यक्रम के माध्यम से पर्यावरण दिवस का अंतिम उदेश्य पाने हेतु सतत कार्य करने का संकल्प किया। कार्यालय द्वारा वर्ष भर इस तरह के अन्य कार्यक्रमों को संपादित करने हेतु कार्य योजना भी बनाई तथा दूरस्थ क्षेत्रों में भी इसका प्रचार-प्रसार करने हेतु संकल्प लिया, क्योंकि केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड स्वच्छ पर्यावरण के लिये सदैव प्रतिबद्ध है .....।

(डॉ.आर.पी.मिश्रा)
प्रभारी
क्षेत्रीय निदेशालय, भोपाल